IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन: जिला अलीगढ़ के संदर्भ में

पूनम
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र
डी.एस. कॉलेज, अलीगढ
पूर्व सम्बद्ध डॉ भीम राव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, आगरा

डॉ बीना कुमारी
प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)
डी.एस. कॉलेज, अलीगढ
पूर्व सम्बद्ध डॉ भीम राव
अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

सार

वैदिक काल से यह सर्वविदित है कि प्रकृति और मानव जाति (अर्थात प्रकृति और पुरुष) जीवन समर्थन प्रणाली का निर्माण और अविभाज्य हिस्सा हैं जो पांच तत्वों यानी वायु, जल, भूमि से बनी है; किसी में भी वनस्पतियों और जीवों का क्षरण अनिवार्य रूप से अन्य चार तत्वों को प्रभावित करता है। पर्यावरण की अवधारणा को मनुष्य के आसपास के सभी घटकों के रूप में सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है। संयुक्त राज्य अमेरिका के पर्यावरण प्रदूषण पैनल, राष्ट्रपति विज्ञान सलाहकार समिति ने पर्यावरण को "सामाजिक, जैविक और भौतिक या रासायनिक कारकों का कुल योग" कहा है जो मनुष्य के परिवेश का निर्माण करता है। पर्यावरण विश्व के लोगों की साझी विरासत है; भविष्य के लिए रोकथाम के माध्यम से इसकी सुरक्षा और पिछले नुकसान की बहाली के लिए एक बहुत बड़े कार्य की आवश्यकता है (खोहू 1991)। इस कार्य को पूरा करने के लिए और पृथ्वी पर मनुष्य और पर्यावरण दोनों को बचाने के लिए मानव जाति के लिए पर्यावरण उन्मुखीकरण बहुत आवश्यक है, क्योंकि मनुष्य ने ही सभी पर्यावरणीय समस्याओं का निर्माण किया है। प्राकृतिक पर्यावरण से भी मनुष्य को लाभ मिलता है। लेकिन अधिकांश समय मनुष्य व्यक्तिगत सुख और लाभ के कारण पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के प्रति अपनी जिम्मेदारी की भावना को भूल जाता है। हिमालय मानव जाति की एक अनूठी विरासत है और यह हमारी सभ्यता को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करता है। अंधाधुंध दोहन और अनियोजित विकास के कारण मानव जाति की यह गौरवपूर्ण विरासत खतरे में है। औद्योगिक सभ्यता और प्राकृतिक संसाधनों का अनियोजित दोहन अंततः ऐसी सेवाओं का निर्माण करता है जो अंततः पयावरण के लिए एक गंभीर चुनौती पैदा करती है। पिछले दो दशकों से वैश्विक पर्यावरण अंतर्राष्ट्रीय चिंता का विषय बन गया है। अधिक से अधिक लोग मनुष्य के कार्यों के उसके पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों को समझने की तत्काल आवश्यकता के बारे में जागरूक हो रहे हैं। यहो कारण है कि विकसित और विकासशील, सभी सरकारों के एजेंडे में पर्यावरण शीर्ष स्थान पर आ गया है। हम अपने देश में पर्यावरण की

स्थिति से भलीभांति परिचित हैं। बढ़ती जनसंख्या, सिकुड़ते जंगल, कटती मिट्टी जैसी समस्याएँ; प्रदूषित नदियाँ, वायु, जल, शोर, मिट्टी क प्रदूषण और उनसे संबंधित पहलुओं ने विकास की दीर्घकालिक योजना के लिए एक नई सावधान और वैज्ञानिक रणनीति की आवश्यकता पर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। अब यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया है कि पर्यावरण को संरक्षित करने और इसकी गुणवत्ता में सुधार करने के लिए एक कार्य योजना विकसित करने की आवश्यकता है। पर्यावरण हमारी सभ्यता और जीवन शैली को बहुत पहले से प्रभावित करता रहा है। इसलिए विभिन्न स्तरों पर लोगों के बीच पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता पैदा करना एक तत्काल आवश्यकता है। इस संदर्भ में, पर्यावरण शिक्षा हमारे दश की जनता के बीच जागरूकता और चेतना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

परिचय:

वैदिक काल से यह सर्वविदित है कि प्रकृति और मानव जाति (अर्थात प्रकृति और पुरुष) जीवन समर्थन प्रणाली का निर्माण और अविभाज्य हिस्सा हैं जो पांच तत्वों यानी वायु, जल, भूमि से बनी है; किसी में भी वनस्पतियों और जीवों का क्षरण अनिवार्य रूप से अन्य चार तत्वों को प्रभावित करता है। पर्यावरण की अवधारणा को मनुष्य के आसपास के सभी घटकों के रूप में सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है। संयुक्त राज्य अमेरिका के पर्यावरण प्रदूषण पैनल, राष्ट्रपति विज्ञान सलाहकार समिति ने पर्यावरण को "सामाजिक, जैविक और भौतिक या रासायनिक कारकों का कुल योग" कहा है जो मनुष्य के परिवेश का निर्माण करता है।

पर्यावरण विश्व के लोगों की साझी विरासत है; भविष्य के लिए रोकथाम के माध्यम से इसकी सुरक्षा और पिछले नुकसान की बहाली के लिए एक बहुत बड़े कार्य की आवश्यकता है (खोहू 1991)। इस कार्य को पूरा करने के लिए और मनुष्य और पर्यावरण दोनों को बचाने के लिए पृथ्वी पर पर्यावरण उन्मुखीकरण मानव जाति के लिए बहुत आवश्यक है, क्योंकि मनुष्य ने ही सभी पर्यावरणीय समस्याओं का निर्माण किया है। प्राकृतिक पर्यावरण से भी मनुष्य को लाभ मिलता है। लेकिन अधिकांश समय मनुष्य व्यक्तिगत सुख और लाभ के कारण पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के प्रति अपनी जिम्मेदारी की भावना को भूल जाता है।

हिमालय मानव जाति की एक अनूठी विरासत है आर यह हमारी सभ्यता को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करता है। अंधाधुंध दोहन और अनियोजित विकास के कारण मानव जाति की यह गौरवपूर्ण विरासत खतरे में है। औद्योगिक सभ्यता और प्राकृतिक संसाधनों का अनियोजित दोहन अंततः ऐसी सेवाओं का निर्माण करता है जो अंततः पर्यावरण के लिए एक गंभीर चुनौती पैदा करती है। पिछले दो दशकों से वैश्विक पर्यावरण अंतर्राष्ट्रीय चिंता का विषय बन गया है। अधिक से अधिक लोग मनुष्य के कार्यों के उसके पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों को समझने की तत्काल आवश्यकता के बारे में जागरूक हो रहे हैं। यही कारण है कि विकसित और विकासशील, सभी सरकारों के एजेंडे में पर्यावरण शीर्ष स्थान पर आ गया है।

हम अपने देश में पर्यावरण की स्थिति से भलीभांति परिचित हैं। बढ़ती जनसंख्या, सिकुड़ते जंगल, कटती मिट्टी जैसी समस्याएँ; प्रदूषित नदियाँ, वायु, जल, शोर, मिट्टी के प्रदूषण और उनसे संबंधित पहलुओं ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है, विकास की दीर्घकालिक योजना के लिए एक नई सावधान और वैज्ञानिक रणनीति की आवश्यकता के लिए।

अब यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया है कि पर्यावरण को संरक्षित करने और इसकी गुणवत्ता में सुधार करने के लिए एक कार्य योजना विकसित करने की आवश्यकता है। पर्यावरण हमारी सभ्यता और जीवन शैली को बहुत पहले से प्रभावित करता रहा है। इसलिए विभिन्न स्तरों पर लोगों के बीच पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता पैदा करना एक तत्काल आवश्यकता है। इस संदर्भ में,पर्यावरण शिक्षा हमारे देश की जनता के बीच जागरूकता और जागरूकता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

पारिस्थितिक संतुलन के लिए पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारियाँ, भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) और पीओए 1992 में कहा गया है कि, "पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने की सर्वोपरि आवश्यकता है।इसे बच्चे से लेकर समाज के सभी उम्र और सभी वर्गों में व्याप्त होना चाहिए। पर्यावरण चेतना को स्कूल और कॉलेजों में शिक्षण को सूचित करना चाहिए। इस पहलू को संपूर्ण शैक्षणिक प्रक्रिया में एकीकृत किया जाएगा।"

वर्तमान समय की वैश्विक पर्यावरणीय समस्याएँ और चुनौतियाँ पर्यावरण शिक्षा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर प्रमुख मुद्दों में से एक बनाती हैं, क्योंकि पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से ही इन उभरती समस्याओं का समाधान हो सकता है। इस प्रकार पर्यावरण शिक्षा शैक्षिक प्रणाली का एक महत्वपूर्ण खंड है। इसमें पर्यावरणीय संकट का सचेत रूप से सामना करने और उस पर काबू पाने का प्रयास करने वाली सभी शैक्षिक गतिविधियाँ शामिल हैं। पर्यावरण शिक्षा का उद्देश्य जागरूकता और ज्ञान प्राप्त करना, वास्तविक जीवन की पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने में भाग लेने के लिए दृष्टिकोण, कौशल और क्षमताओं का विकास करना है, वास्तव में यह मनुष्य को अपने पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए ज्ञान कौशल और प्रतिबद्धता से लैस करने की एक व्यावहारिक प्रक्रिया है।

उद्देश्य:

अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का पालन किया जाएगा –

1- पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में अंतर की जांच करना।

2- ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि से संबंधित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में अंतर का अध्ययन करना।

3- विज्ञान और कला स्ट्रीम से संबंधित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में अंतर की जांच करना।

परिकल्पना:

अध्ययन में निम्नलिखित शोध परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जाएगाः

1- पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर होगा।

2- ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि से संबंधित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में उल्लेखनीय अंतर दिखाएंगे।

3- विज्ञान और कला पृष्ठभूमि से संबंधित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृ ष्टिकोण में उल्लेखनीय अंतर दिखाएंगे।

अनुसंधान विधिः

वर्तमान अध्ययन अनुसंधान की वर्णनात्मक सह सर्वेक्षण विधि द्वारा आयोजित किया गया था क्योंकि अनुसंधान का उद्देश्य मौजूदा "लिंग, धारा और इलाके के संबंध में सेवारत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण" का पता लगाना और वर्णन करना था।

चर:

वर्तमान अध्ययन में, पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण को आश्रित चर और लिंग, स्थानीयता और धारा को स्वतंत्र चर माना गया है।

जनसंख्या:

वर्तमान अध्ययन में विभिन्न सरकारी कार्यालयों में सेवारत शिक्षक शामिल हैं। उत्तर प्रदेश राज्य के जिला अलीगढ के माध्यमिक विद्यालयों ने अध्ययन की जनसंख्या का गठन किया।

नमूना और नमूनाकरण:

वर्तमान अध्ययन में, नमूने में विभिन्न सरकार के विज्ञान और कला धाराओं से संबंधित लिंग (पुरुष और महिला) दोनों के 200 सेवाकालीन शिक्षक शामिल थे। जिले के माध्यमिक विद्यालय। उत्तर प्रदेश राज्य के अलीगढ़ को यादृच्छिक विधि के माध्यम से यानी लॉटरी प्रणाली के उपकरण के माध्यम से निकाला गया और फिर प्रारंभिक नमूना क्लस्टर नमूना तकनीक के माध्यम से निकाला गया–जिसमें समूहों के बड़े समूह नमूना इकाइयां हैं।

लिंग के संदर्भ में नमूने की संरचना

क्रम संख्या	विशिष्ट	पुरुष	महिला	कुल
1	माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	100	100	200
	कुल	100	100	200

वर्ग के संदर्भ में नमूने की संरचना

क्रम संख्या	विशिष्ट	विज्ञान	कला	कुल
1	माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	100	100	200
	कुल	100	100	200

तालिका संख्या–1 और संख्या–2 से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि अध्ययन का नमूना काफी बड़ा था और जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता था।

नमुने का प्रारूप							
कुल नमुना							
सेवारत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक							
200							
विज्ञान				कला			
100				100			
पुरुष		महिला		पुरुष		महिला	
50		50		50		50	
शहरी	ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण
25	25	25	25	25	25	25	25

अध्ययन के लिए उपकरण

अन्वेषक ने उपयुक्तता, उपयुक्तता, प्रासंगिकता, विश्वसनीयता वैधता भाषा आदि के संदर्भ में परीक्षण करके डेटा संग्रह के लिए निम्नलिखित उपकरणों का चयन किया।

(प) पर्यावरण जागरूकता क्षमता उपाय (ईएएएम), परवीन कुमार झा द्वारा।

(पप) ताज एन्वायर्नमेंटल एटीट्यूड स्केल ख्ज्म्ौ, हसीन ताज द्वारा।

प्रस्तुत अध्ययन में इसका रूपांतरित हिन्दी संस्करण (डॉ.) बी.पी.वर्मा एवं डॉ. आर.एस. द्वारा प्रस्तुत किया गया है। चौहान का प्रयोग किया गया है।

परीक्षणों का प्रशासन

उपकरणों का प्रशासन दो चरणों में किया गया। पहले चरण में "पर्यावरण जागरूकता क्षमता माप" प्रशासित किया गया था और दूसरे चरण में परीक्षणों के प्रशासन के पूरा होने पर दोनां के बीच दस मिनट के अंतराल के साथ "ताज पर्यावरण दृष्टिकोण स्केल" प्रशासित किया गया था।

उपकरणों की स्कोरिंग

स्कोरिंग परीक्षणों के लेखकों द्वारा तैयार की गई स्कोरिंग कुंजियों की सहायता से की गई थी।

एकत्रित आंकड़ों का सारणीकरण

उत्तर दी गई शीटों को श्रेणियों के अनुसार स्कोर करने की प्रक्रिया करने के बाद, नमूना विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए स्कोर के रूप में डेटा को विभिन्न उप समूहों में व्यवस्थित किया गया था। इस प्रकार एकत्रित आंकड़ों को विभिन्न तालिकाओं में सारणीबद्ध किया गया। इस प्रकार निम्नलिखित तालिकाएँ सामने आईं।

(1) सेवारत पुरुष और सेवारत महिला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृ ष्टिकोण में अंतर का महत्व।

(2) सेवारत ग्रामीण और सेवाकालीन शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में अंतर का महत्व।

(3) सेवारत विज्ञान और सेवाकालीन कला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में अंतर का महत्व।

सांख्यिकीय तकनीकें

सारणीबद्ध डेटा को मीन, एसडी का उपयोग करके सांख्यिकीय उपचार के अधीन किया गया था। और 'टी'— परीक्षण, तैयार की गई परिकल्पनाओं के परीक्षण के संदर्भ में सांख्यिकीय तकनीक। 'ज' अनुपात का महत्व ' ज ' मानों की तालिका की सहायता से पाया गया जो महत्व के चयनित स्तर (.05 और .01 स्तर) पर नमूने की स्वतंत्रता की डिग्री के साथ शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने के लिए आवश्यक 'ज' अनुपात के महत्वपूर्ण मूल्यों को इंगित करता है।

वर्तमान जांच में डेटा का विश्लेषण और परिणाम की चर्चा इस प्रकार है:

परिकल्पना संख्या—1 का परीक्षणरू "पुरुष और महिला सेवारत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर होगा"।

तालिका क्रमांक 1

सेवारत पुरुष और सेवारत महिला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृ ष्टिकोण में अंतर का महत्व।

क्रम संख्या	चर	सेवारत पुरुष शिक्षक ;छत्र100द्ध		सेवारत महिला शिक्षक ;छत्र100द्ध		कि	ष्जष् टंसनम
		डमंद	क	डमंद	क		
1	पर्यावरण जागरूकता	45ण्49	3ण्51	45ण्11	4ण्10	198	0ण्70 छै
2	पर्यावरण दृष्टिकोण	189ण्13	39ण्87	192ण्66	45ण्84	198	0ण्58 छै

पहदपपिबंदज ज ण्05 समअमस त्र 1ण्97' ण्01 समअमस त्र 2ण्60' छै त्र छवज ैपहदपपिबंदज

तालिका संख्या 1 से पता चलता है कि, दो समूहों (पुरुष सेवारत शिक्षकों और महिला सेवारत शिक्षकों) के बीच औसत अंतर के महत्व का परीक्षण करने वाले दोनों 'टी' मूल्यों की गणना .70 और .58 के रूप में की गई थी, जो कि यहां भी महत्वपूर्ण नहीं हैं। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सेवारत पुरुष और सेवाकालीन महिला शिक्षक अपनी पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण के संदर्भ में एक जैसे थे।

पर्यावरण जागरूकता पर पुरुष सेवाकालीन शिक्षकों और महिला सेवाकालीन शिक्षकों का औसत स्कोर क्रमशः 45. 49 और 45.11 था और पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर यह क्रमशः 189.13 और 192.66 था। इस प्रकार स्पष्ट है औसत स्कोर में अंतर नमूनाकरण में उतार—चढ़ाव के कारण हो सकता है।

इसलिए शून्य परिकल्पना कि, "पुरुष और महिला सेवारत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर होगा", पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरण दृष्टिकोण प्रत्येक में खारिज कर दिया गया था।

परिकल्पना संख्या–2 का परीक्षणरू "ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि से संबंधित सेवारत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में उल्लेखनीय अंतर दिखाएंगे"।

तालिका क्रमांक 2

सेवारत ग्रामीण और सेवाकालीन शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में अंतर का महत्व।

क्रम संख्या	चर	सेवारत ग्रामीण शिक्षक ;छत्र100द्ध		सेवारत शहरी शिक्षक ;छत्र100द्ध		कि	ष्जष् टंसनम
		डमंद	क	डमंद	क		
1	पर्यावरण जागरूकता	45ण्10	3ण्93	45ण्50	3ण्70	198	0ण्74 छै
2	पर्यावरण दृष्टिकोण	190ण्14	43ण्94	191ण्65	41ण्88	198	0ण्25 छै

पहदपपिबंदज ज ण्05 समअमस त्र 1ण्97' ण्01 समअमस त्र 2ण्60' छै त्र छवज ैपहदपपिबंदज

तालिका संख्या 2 से पता चलता है कि तुलना करने पर सेवाकालीन ग्रामीण शिक्षक और सेवाकालीन शहरी शिक्षक अपनी पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में समान पाए गए क्योंकि दोनों 'टी' मान (.74 और .25) तक पहुंचने के लिए बहुत कम थे।

तालिका संख्या 6 से यह भी स्पष्ट है कि, सेवारत ग्रामीण शिक्षकों और सेवारत शहरी शिक्षकों के बीच उनकी पर्यावरण जागरूकता के अनुरूप कोई महत्वपूर्ण अंतर मौजूद नहीं था क्योंकि दोनों समूहों के औसत स्कोर (45.10 और 45.50) लगभग समान थे, दूसरी ओर, के संबंध में उनका पर्यावरणोय रवैया सेवाकालीन शहरी शिक्षकों का उनके सेवाकालीन ग्रामीण समकक्षों की तुलना में थोड़ा अधिक अंक था। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि, सेवाकालीन ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों और सेवाकालीन शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति कमोबेश समान रवैया था।

इसलिए शून्य परिकल्पना कि, "ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि से संबंधित सेवारत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में उल्लेखनीय अंतर दिखाएंगे", सेवाकालीन ग्रामीण और सेवाकालीन शहरी शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण के लिए खारिज कर दिया गया था।

परिकल्पना संख्या–3 का परीक्षणरू "विज्ञान और कला पृष्ठभूमि से संबंधित सेवारत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में उल्लेखनीय अंतर दिखाएंगे"।

तालिका क्रमांक 3

सेवारत विज्ञान और सेवाकालीन कला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में अंतर का महत्व।

क्रम संख्या	चर	सेवारत विज्ञान शिक्षक ;छत्र100द्ध		सेवारत कला शिक्षक ;छत्र100द्ध		कf	ष्जष् टंसनम
		डमंद	क	डमंद	क		
1	पर्यावरण जागरूकता	45ण्00	4ण्50	45ण्60	2ण्96	198	1ण्11 छै
2	पर्यावरण दृष्टिकोण	191ण्28	46ण्63	190ण्51	39ण्66	198	0ण्13 छै

पहदपपिबंदज ´ज ण्05 समअमस त्र 1ण्97´ ण्01 समअमस त्र 2ण्60´ छै त्र छवज ̄पहदपपिबंदज

. इसे तालिका संख्या 3 में देखा जा सकता है कि सेवाकालीन विज्ञान शिक्षकों और सेवाकालीन कला शिक्षकों के बीच पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर और पर्यावरणीय दृष्टिकोण के संबंध में महत्वपूर्ण अंतर नहीं था क्योंकि दोनों 'टी' मान .05 के महत्व के स्तर पर गैर महत्वपूर्ण पाए गए थे। इस प्रकार सेवारत शिक्षकों के समूह में पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।

तालिका संख्या 3 से यह भी पता चलता है कि, सेवाकालीन विज्ञान शिक्षकों और सेवाकालीन कला शिक्षकों के बीच उनकी पर्यावरण जागरूकता के अनुरूप कोई महत्वपूर्ण अंतर मौजूद नहीं था क्योंकि दोनों समूहों के औसत स्कोर (45.00 और 45.60) लगभग समान थे, दूसरी ओर उनके संबंध में पर्यावरण संबंधी रवैया सेवाकालीन विज्ञान शिक्षकों का उनके सेवाकालीन कला शिक्षकों के समकक्षों की तुलना में थोड़ा अधिक अंक था। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि, सेवाकालीन विज्ञान माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक और सेवाकालीन कला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक पर्यावरण के प्रति शिक्षकों का भी कमोबेश यही रवैया था। इसलिए, शून्य परिकल्पना कि, "विज्ञान और कला पृष्ठभूमि से संबंधित सेवारत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण में उल्लेखनीय अंतर दिखाएंगे", दोनों मामलों में खारिज कर दिया गया था।

निष्कर्षरू

आंकड़ों की चर्चा से सामने आए निष्कर्षों से पता चला कि: पुरुष इनसर्विस माध्यमिक स्कूल शिक्षकों और महिला इन–सर्विस माध्यमिक स्कूल शिक्षकों, दोनों समूहों में अपने पर्यावरण के प्रति लगभग समान जागरूकता थी, जबकि पर्यावरणीय दृष्टिकोण के अनुरूप महिला इन–सर्विस माध्यमिक स्कूल शिक्षक थे। अपने पुरुष–सेवाकालीन समकक्ष से बेहतर, लेकिन महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं।

इस प्रकार, पुरुष सेवाकालीन माध्यमिक विद्यालय शिक्षक और महिला सेवाकालीन माध्यमिक विद्यालय शिक्षक अपनी पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण के संदर्भ में एक जैसे थे। यह हमें यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करता है कि, लिंग के प्रभाव का सेवारत माध्यमिक विद्यालय क शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

संबंधित तालिका में प्राप्त परिणाम इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि: सेवारत ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के साथ–साथ सेवाकालीन शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में उनको पर्यावरण जागरूकता के संबंध में, दोनों समूहों में लगभग समान जागरूकता थी, जबकि उनके पर्यावरणीय दृष्टिकोण के संदर्भ में। –सेवारत शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अपने सेवाकालीन ग्रामीण समकक्षों की तुलना में थोड़े बेहतर थे, लेकिन महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं थे।

संबंधित तालिका के डेटा से प्राप्त परिणामों से पता चला कि: सेवाकालीन विज्ञान माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक और सेवाकालीन कला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अपनी पर्यावरण जागरूकता के संबंध में दोनों समूह लगभग समान रूप से जागरूक थे, जबकि सेवाकालीन विज्ञान के दृष्टिकोण के अनुरूप थे। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अपने सेवारत कला समकक्षों की तुलना में थोड़े बेहतर थे, लेकिन महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं थे। इसलिए, दोनों समूह (सेवाकालीन विज्ञान माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक और सेवाकालीन कला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक) अपनी पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण के संदर्भ में समान थे।

ग्रंथ सूचीरू

ळंततमजजए भ्ण्म्ण ;1971द्धरू जंजपेजपबे पद च्ेलबीवसवहल ंदक म्कनबंजपवदए प्दजमतदंजपवदंस ठववा ठनतमंनए भ्लकमतंइंकण
छब्म्त्ज्ए ;1981द्धरू म्दअपतवदउमदजंस मकनबंजपवद ंज जीम `बीववस समअमसरू । समंक चंचमतए चण्21ए छब्म्त्ज् छमू क्मसीपण
ज्वकंतवए डपबींमसए च्ण ;1985द्धरू म्बवदवउपब क्मअमसवचउमदज पद जीम जीपतक ॅवतसकए व्तपमदज स्वदहउंदए चचण 61.68ण
लजदपबाए झ्ण्डण ;1985द्धरू स्पअपदह पद जीम म्दअपतवदउमदजंसरू । `वनतबम इववा वित मदअपतवदउमदजंस मकनबंजपवदण ;म्दहसपी जतंदेसंजपवद तिवउ त्नेपंदद्धण न्छम्ैब्व्ए च्ंतपेण छंदावअं क्नउां च्नइसपबंजपवदण
लजदपबाए झ्ण्डण्ए मज ंसण ;1985द्धरू । `वनतबम इववा वित मदअपतवदउमदजंस मकनबंजपवदए चचण्75ए न्छम्ैब्व्ए च्ंतपेण छंदावअं क्नउां च्नइसपबंजपवदण
ठमेजए श्रण्ॅण ;1986द्धरू त्मेमंतबी पद म्कनबंजपवदए छमू क्मसीपरू च्तमदजपबम भ्ंसस वि प्दकपंए चण 135ण
ेनासंए ।दपस ;1986द्धरू ंतमदमे तमसंजमक जव मदअपतवदउमदजंस चवससनजंजपवद ंउवदह `जनकमदजे वि ळतंकनंजपवद समअमसए डण्म्कण कपेमतजंजपवद वि ैनीींकपं न्दपअमतेपजलए न्कंपचनतण
छब्म्त्ज्ए ;1988द्धरू छंजपवदंस बनततपबनसनउ वित मसमउमदजंतल ंदक `मबवदकंतल मकनबंजपवदरू । तिंउमूवताए चचण्25. 27ए छब्म्त्ज् छमू क्मसीपण
ोंतउंए ळंदींलंउ ;1991द्धरू ।दंसलजपबंस `जनकल वि ंजजपजनकम ंदक ेंचपतंजपवदे जवूंतके मदअपतवदउमदजंस मकनबंजपवदए डण्म्कण कपेमतजंजपवदए ।रउमत न्दपअमतेपजलए ।रउमतण
ल्दह.श्रपदह.ोपद ;1993द्धण च्मतबमचजपवद वि चतम.मतअपबम `मबवदकंतल `बीववस जमंबीमते पद ज्ंपूंद जीम त्मचनइसपब वि बिपदंए बवदबमतदपदह म्दअपतवदउमदजंस म्कनबंजपवदए क्पेमतजंजपवद ।इेजतंबजे प्दजमतदंजपवदंसए ;1994द्धए टवसण 54;8द्धण
ठींजजंबींतलंए ळण्ब्ण ;1996द्धरू ।`ैजनकल वि म्दअपतवदउमदजंस ।ूंतमदमे ंउवदहए च्तपउंतल ळतंकम ळपतस `ैजनकमदजे ंदक जीमपत च्ंतमदजे जव टंतंदेंपण ंद प्दकमचमदकमदज `जनकलए वि ।ससींइंक `ैजंजम प्देजपजनजम वि म्कनबंजपवदंस डंदंहमउमदज ंदक ज्तंपदपदहण प्दकपंद म्कनबंजपवदंस ।इेजतंबजेए ऑनम 6ए श्रंदए 1999ए चच 65.66 ठपव क्पअमतेपजिए ब्ण्च्ण्त्ण म्दअपतवदउमदजंस म्कनबंजपवद ब्मदजतमए जीम ब्ण्च्ण त्ंउूंउप ।पलंत थ्वनदकंजपवदए डंकतेंए ;1998द्धण
झ्नीसमउमपतए भ्ण्ए ठमतहीए भ्ण्टण्क्ण्ए ंदक ंस्हमतूमपरए छण्ए ;1999द्धरू म्दअपतवदउमदजंस ।दवूसमकहमए

ंजजपजनकम ंदक इमीॅंअपवनत पद क्नजबी `मबवदकंतल मकनबंजपवदए जीम श्रवनतदंस वि म्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ंदक क्मअमसवचउमदजए अवस०30ए दव०2ए चच०4.14०
छब्म्त्ज्ए ;2000द्धरू छंजपवदंस बनततपबनसनउ वित `बीववस मकनबंजपवदए चच०35.37ए छब्म्त्ज् छमू क्मसीप०
।ददनंस त्मचवतज ;2000.01द्धरू डपदपेजतल वि म्दअपतवदउमदज ंदक थ्वतमेजेए ळवअमतदउमदज वि प्दकपंए छमू क्मसीपए चच० 149.150०
।ददनंस त्मचवतज ;2000.01द्धरू डपदपेजतल वि म्दअपतवदउमदज ंदक थ्वतमेजेए ळवअमतदउमदज वि प्दकपंए छमू क्मसीपए च.16०
ज्ञनातमजपए ठण्त्ण ंदक ळपींतए ैण्;2004द्धरू ष्मिमिबज वि अपकमव.पदजमतअमदजपवद `जतंजमहल वद जीम मदअपतवदउमदजंस ंजजपजनकम वि मबवदकंतल `जनकमदजेष् ब्ेलबी.सपदहनंए अवस०34;1द्धएचच०17.22ए श्रंद० 2004०
ौलं ंडंतलए त्० ंदक च्ंनस ंत्रए ८ ;2005द्धरू म्दअपतवदउमदजंस ।ूंतमदमे ंउवदह भ्पही `बीववस `जनकमदजे० म्कनज्तंबोए अवस०5;4द्धए क्मबमउइमत 33.35०
मदहनचजंए डंकीनउंसं ;2005द्धरू म्दअपतवदउमदजंस ।ूंतमदमे वि जीम म्दअपतवदउमदजंससल ंबजपअम ंदक ैंपअम जनकमदजे पद तमसंजपवद जव डवजपअंजपवद ंदक ।बंकमउपब च्मतवितउंदबमण् चीण्क्ए म्कनबंजपवदए न्दपअमतेपजल वि ब्ंसबनजजंए ब्ंसबनजजंए ळनपकमरू क्तण् च्ण् ज्ञण् बींतंइवतजलण्
छंहतंए टपचमदकतं ंदक वीपससपवदए श्रैण् ;2006द्धरू ।ैजनकल वि मदअपतवदउमदजंस मकनबंजपवद ूंतमदमे ंउवदह मबवदकंतल `बीववस जमंबीमतेण् च्मतेचमबजपअम पद म्कनबंजपवदए अवस० 22ए दव०3० ल्कंअए च्ैण् ंदक ठींतजपए ।ण् ;2007द्धरू ।ैजनकल वि तमसंजपवदेीपच इमजूममद मदअपतवदउमदजंस ूंतमदमे ंदक `बपमदजपपिब ंजजपजनकम ंउवदह ेपहीमत `मबवदकंतल `जनकमदजेए श्रवनतदंस वि प्दकपंद म्कनबंजपवदए अवस०गगगपपपए दव०2ए ।नहनेजए 2007
ंगमदंए ड० ;2008द्धरू म्दअपतवदउमदजंस बवदेबपवनेदमे ंउवदह `जनकमदजेए चंचमत चतमेमदजमक पद जीम दंजपवदंस `मउपदंत वद मदअपतवदउमदजंस ूंतमदमे पद जमंबीमत मकनबंजपवदए प्ब्म्डए ळींपंइक ;न्च्द्ध
मंउइंतंउएळण् ंदक छंहंतंरए ठण् ;2010द्धरू ।द ंदंसलेपे वि समअमस वि मदअपतवदउमदजंस ूंतमदमेरू जीम बेंम वि चतवेचमबजपअम जमंबीमतेए म्कनज्तंबोए अवस०9ए दव० 8ए चच०39.43ए ।चतपसए2010०